ISSN : 2454-308X
Volume : 03
Issue : 05

INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
REFEREED | PEER REVIEWED

July - September 2017

आर्य समाज का गुरूकुल व्यवस्था से ग्रामीण क्षेत्र शिक्षा में सुधार : एक अध्ययन

Pardeep Kumar
Research Scholar,
MDU,Rohtak
V.P.O.- Hamirgarh
Distt.-Jind (Haryana).INDIA

ABSTRACT

19वी शताब्दी में भारतीय समाज में कई तरह के धार्मिक आन्दोलन चलाए गए थे जैसे राजाराम मोहन राय ने समाज बुराई सती प्रथा को समाप्त कराया। स्वामी विवेकान्द ने भारतीय संस्कृति को विश्वधर्म सम्मेलन में दिखाया। लेकिन स्वामी दयानन्द भारत में ना केवल जाति–पाती व अन्धविष्वास बाह्य आण्डम्बरो को मिटाया बल्कि शिक्षा के क्षैत्र में सबसे ज्यादा सुधार किया । हरियाणा राज्य में उस समय सबसे कम शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्वामी दयानन्द की गुरूकुल व्यवस्था के कारण ग्रामिण क्षेत्र में बहुत सुधार किया गया।

KEYWORDS : धर्म, आंदोलन, शिक्षा, गुरूकुल, अंधविश्वास, विशेष शब्द, आर्य समाज।

भूमिका : उत्तरी भारत में हिन्दू धर्म और समाज में सुधार का आर्य समाज ने किया। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती 1875 में बम्बई में की थी। इसने शिक्षा के क्षैत्र में सबसे ज्यादा सुधार किया। आर्य समाज के द्वारा पंजाब में कई तरह के शिक्षा केन्द्र खोले गये। इनमें सबसे महत्वपूर्ण डी.ए.वी. लाहौर था। फिर फिरोजपुर मुल्तान और लाहौर में सभा करके 9 नवम्बर 1883 में इस प्रकार की संस्था खोलने का निर्णय लिया गया। यहाँ पर दान के रूप में 7 हजार रूपये एकत्रित किए गए। इनका प्रमुख उद्देय स्वामी दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजली प्रदान की। इनका मुख्य विषय हिन्दू साहित्य को पढ़ाना, संस्कृत व वेदों का प्रचार करना था लेकिन इसमें नया ये था कि अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान को लागू करना। लाहौर कॉलेज का प्रधानाचार्य लाला हंसराज को 80 रूपये वेतन में बनाया गया था। इसी तरह लाला मुंषी कांगड़ी में गुरूकुल की स्थापना में सहयोग दिया। [2]

गुरूकुल :

इनकी संख्या लगभग 200 है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं जिन शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की थी, उनके लिए उन्होंने गुरूकुल नाम का प्रयोग नहीं किया था। पर उन्होंने जिस शिक्षा पद्धति का अपने ग्रन्थों में प्रतिपादन किया था और प्राचीन भारत में पठन–पाठन के लिए जिस प्रकार के आरण्यक आश्रम व आयार्यकुल विद्यामान थे, उन्हें दृष्टि में रखकर आर्यसमाज द्वारा गुरूकुलों की स्थापना की परम्परा का आरम्भ हुआ। इनमें महर्षि के शिक्षा–विषयक मन्तव्यों को क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया गया और आरंभिक रूप से ये प्रयत्न सफल भी हुआ। कांगड़ी आदि के गुरूकुल नगरों से दूर एकान्त प्रदेष में खोले गये थे और उनमें सब विद्यार्थियों के साथ एक सदृश व्यवहार किया जाता था। धनी और निर्धन, ब्राह्मण और शूद्र आदि का कोई भी भेद न कर सब विद्यार्थी एक साथ रहते थे। एक वस्त्र पहनते थे एक समान भोजन करते थे। माता–पिता से वे स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं मिल सकते थे। अवकाष के दिनों मे भी अपने घर नहीं जा सकते थे और उन्हें यह भी ज्ञात नहीं हो पाता था, कि वे किस जाति के हैं या उनके परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति क्या है? उनके पाठ्यक्रम में आर्य ग्रन्थों को मुख्य स्थान दिया गया था। ब्रह्मचारियों का रहन–सहन बहुत सादा तथा जीवन तपस्यामय या उनके सिर और पैर नंगे रहते थे और शहरों के दूषित वातावरण के प्रभाव से उन्हें मुक्त रखा जाता था।

गुरूकुल काँगड़ी के स्वरूप में भी स्वराज्य के पश्चात महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पहले उसकी विद्यालंकार आदि उपाधियों को सरकार द्वारा बी.ए. के समकक्ष स्वीकृत कराया गया और फिर उसे एक पृथक विष्वविद्यालय बनाने का प्रयत्न किया गया। विष्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उसकी यूनिवर्सिटी की स्थिति स्वीकार कर ली। 1902 में इसकी स्थापना महात्मा मुंशीराम ने की थी तथा भूमि का दान मुंशी अमरसिंह ने किया था। इसके अलावा गुरूकुल वृन्दावन और गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि अनेक गुरूकुलों द्वारा दी जाने वाली उपाधियों को भी सरकार द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है। [3]

हरियाणा में आर्य समाज तथा शिक्षा :

स्वामी दयानन्द ने सारे भारत में आर्य समाज का प्रचार किया लेकिन हरियाणा में उसको काफी सहयोग मिला। यहाँ पर गरीब किसान वर्ग के लोग उनसे जुड़ गये थे। स्वामी जी पहली बार पंजाब से बाते हुए हरियाणा के शहर अंबाला में 17 जुलाई 1878 को आए। इस स्थान पर स्वामी जी को रेलगाड़ी बदलने के लिए ठहरना पड़ा था। क्योंकि यहाँ से उन्हें रूड़की जाना था। लेकिन स्वामी जी

का सही मायने में आगमन 1880 ई. में हुआ, जब स्वामी जी ने हरियाणा की प्रसिद्ध नगरी रेवाड़ी में आकर ठहरे। उन्होंने रेवाड़ी में आर्य समाज की एक शाखा भी स्थापित थोड़े समय पश्चात रोहतक तथा हरियाणा के अन्य भागों में भी आर्य समाज की साखाएँ स्थापित की गई। हरियाणा में आर्य समाज के प्रचार के प्रमुख व्यक्तियों का योगदान इस प्रकार है – इनमें सर्वप्रथम पंडित बस्तीराम का नाम आता है। पं. बस्तीराम का जन्म रोहतक जिला की झज्जर तहसील के ग्राम सुल्तानपुर खेड़ी में सन् 1841 ई. में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। रेवाड़ी में आर्य समाज के प्रचार के श्रेय राव युधिष्ठर को जाता है।[4]

गुरूकुल भैंसवाल :

मार्च 1920 में हरियाणा के रोहतक में खोला गया। दो वर्ष बाद पण्डित युधिष्ठिर विद्यालंकार के गुरूकुल के आचार्य पद पर नियुक्त हो जाने पर किस प्रकार वहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित पाठविधि का अनुसरण करने का प्रयत्न किया गया।

भैंसवाल गुरूकुल में पण्डित युधिष्ठिर विद्यालंकार के निर्देषन में गुरूकुल विद्यापीठ ने ऐसा रूप प्राप्त करना प्रारम्भ किया, जो गुरूकुल काँगड़ी तथा उस समय के अन्य सभी गुरूकुलों से भिन्न था। इस विद्यापीठ में अपने लिए दो कार्य निर्धारित किये – महर्षि पंतजलि, राजर्षि मनु और महर्षि दयानन्द आदि कवियों की आज्ञा के अनुसार सदाचार की ऊँचे दरजे की शिक्षा देना। यहाँ पर वैदिक शिक्षा के साथ गणित, इतिहास, भूगोल आदि का भी ज्ञान दिया जाता है। जिस विचार से गुरूकुल विद्यापीठ हरियाणा ने छोटे बालकों के लिए सामान्य विद्यालय की तीन कक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था की थी, वह यह था कि बालक हिन्दी, गणित भूगोल, इतिहास और वास्तुपाठ का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर ले। संस्कृत भाषा और व्याकरण की उन्हें प्राथमिक जानकारी हो जाए, अष्टाध्यायी वे कण्ठस्थ कर लें, सन्ध्या–हवन–रूपस्तिवाचन और शान्तिपाठ के सब मन्त्र उन्हें साद हो जाएं। यह प्रयत्न था कि इस प्रकार सोलह साल तक विद्याभ्यास के अनन्तर ब्रह्मचारी एक वेद की शिक्षा सुचारू रूप से प्राप्त कर लेगा। इन तीन वेदों में विद्यार्थी को ब्राह्मण सहित एक वेद पढ़ना होता था। विद्यार्थी किस वेद का अध्ययन करें, यह उसकी इच्छा पर था।[5]

इन्होंने आर्य समाज के प्रभाव में आने पर ली गई रिस्वत को वापिस कर दिया। पण्डित ब्रह्मानन्द के सुझाव पर उन्होंने विद्यालय के बजाय एक गुरूकुल की स्थापना करने का निर्णय किया जिसके परिणामस्वरूप गुरूकुल भैंसवाल की स्थापना हुई। फिर उसने बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी 1939 में उन्होंने कन्या गुरूकुल खानपुर की स्थापना की। इन संस्थाओं की स्थापना तथा उन्नति का प्रधान श्रेय भक्त फूलसिंह को ही दिया जाना चाहिए। इन गुरूकुलों के लिए धन संग्रह करने तथा आन्तरिक विवादों का अन्त कर उन्हें उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने में उनका मुख्य कर्त्तव्य था और उन्होंने शुद्धि और दलितोद्वार के आन्दोलन में उन्होंने तत्परता से कार्य किया। आर्य समाज के प्रभाव से कुछ मूल्ले जाट शुद्ध होकर हिन्दू होना चाहते थे। भक्त फूलसिंह ने उन्हें हिन्दू धर्म में दलित करने तथा उनके साथ रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए क्रियात्मक पग उठाए। इन्होंने जाति–पातिवाद का भी विरोध किया। हैदराबाद सत्याग्रह में भक्त फूलसिंह ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस सत्याग्रह के लिए रोहतक में जो सत्याग्रह सर्वसम्मति से उसके प्रधान चुने गये थे। रोहतक जिले से हैदराबाद सत्याग्रह में जाने वालों की संख्या हजारों में थी। कुछ मुसलमानों ने फौज का वेस धारण करके उनको गोली से मार दिया तो वो इस प्रकार धर्म के लिए शहीद हो गए थे। लेकिन खानपुर गुरूकुल आज काफी योगदान दे रहा है। लड़कियों की शिक्षा में क्योंकि यहाँ पर हजारों छात्राएँ पढ़ती है।[6]

हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले की नारनौल तहसील में खानपुर गाँव के समीप 2 अक्तूबर 1982 को यह गुरूकुल स्थापित किया गया था। इसमें आर्य प्रणाली द्वारा संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी जा रही है और भविष्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट पाठविधि के अनुसार अध्ययन–अध्यापन कराने की योजना है। इस संस्था की स्थापना की प्रद्युम्न व्याकरणाचार्य द्वारा की गई है। दो एकड़ से कुछ अधिक भूमि खानपुर गाँव द्वारा इसके लिए प्रदान की गयी है।

आर्य गुरूकुल, कालवा (जींद) :

सन् 1965 में ब्रह्मचारी वेदपाल और ब्रह्मचारी चन्द्रदेव द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। गुरूकुल का उद्देष्य आर्य पद्धति से शिक्षा देकर वैदिक विद्वानों का निर्माण करना है। छोटी कक्षाओं की पढ़ाई की इस संख्या में कोई व्यवस्था नहीं है। पढ़े–लिखे नवयूवको को ही इसमें प्रविष्ट किया जाता है। प्रवेश के समय विद्यार्थी की न्यूनतम योग्यता दसवीं कक्षा तक की होनी आवश्यक है। पाठ्यक्रम का प्रारम्भ महर्षि पाणिनिकृत शिक्षा सत्र से किया गया है और क्रमशः अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करना धातु पाठ, उणादिकोष, लिंगानुपासन फिर सूत्र, कासिका, महाभाष्य, निरूक्त आदि के अध्ययन की व्यवस्था की गयी है।[7] आचार्यकुल ऋतस्थली, माण्डौढ़ी हरियाणा के रोहतक जिले में बहादुरगढ़ से पाँच मील की दूरी पर यह संस्था विद्यमान है। जिसकी स्थापना 5 जून सन् 1994 के दिन चौधरी प्रियव्रत ठेकेदार द्वारा की गयी थी। इसके संचालक श्री मानाचार्य सरस्वती है।

हरियाणा के रोहतक जिले में लड़रावन नामक ग्राम के समीप यह गुरूकुल स्थित है। 1995 के दिन इसकी स्थापना हुई थी और स्वामी सूर्यवेष तथा श्री जोगीराम आर्य का इसकी स्थापना में प्रधान कर्तव्य था। वेद–वेदांग की शिक्षा तथा वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार इस संख्या का मुख्य उद्देष्य है। संस्था के लिए भूमि गांव पंचायत लड़रावन ने प्रदान की थी और उस पर भवन बनाने के लिए धन जनता से दान से प्राप्त हुआ था। इस संस्था में विद्यार्थियों की संख्या 90 तक पहुँच गयी थी और सब कार्य ठीक प्रकार से होने लग गया था।[8]

कन्या गुरुकुल, खरल (जीन्द) :

स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार कौरव–पाण्डवों की जन्मभूमि मानी जाने वाली स्थली खरल में कन्या गुरुकुल की स्थापना 26 जनवरी 1976 को गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर स्वामी रत्नदेव सरस्वती के कर कमलों से हुई थी। शिक्षा की दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत पिछड़ा हुआ है। यहाँ कन्याओं की कोई शिक्षण–संस्था नहीं थी। स्वामी रत्नदेव नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए कन्याओं की शिक्षा के लिए संस्थायें स्थापित करने का अनथक प्रयास कर रहे हैं। अनेक संरक्षण में व उन द्वारा संचालित अन्य शिक्षण–संस्थायें आर्य विद्यापीठ गुरुकुल, कुम्भा खेड़ा तथा वैदिक कन्या पाठशाला हसनगढ़ (हिसार) है। उन्होंने स्थानीय व्यक्तियों, नरवाना के आर्य भाईयों तथा धनपतियों का सहयोग प्राप्त करके खरल में कन्या गुरुकुल का विकास किया है।[9]

आर्य समाज ने सारे भारत में शिक्षा का प्रचार किया। लेकिन उत्तर भारत पंजाब, हरियाणा में सबसे ज्यादा इसने शिक्षण संस्थान खोले। लेकिन हरियाणा में उस समय शिक्षा नाममात्र की थी। यहाँ पर लोग अन्धविष्वासों से घिरे हुए थे। सीधी सादी जनता पाखण्ड को मानती थी। हरियाणा में कृषि वर्ग ज्यादा था वो अपने काम की तरफ ज्यादा ध्यान देता था। लेकिन आर्य समाज के आने से लोगों में जागरूकता बढ़ी और लोगों ने अपने बच्चों को स्कूल में भेजना शुरू कर दिया। हरियाणा में आर्य समाज का काफी योगदान रहा लेकिन इसमें बहुत सारे लोगों ने भाग लिया, लाला लाजपत राय, मुंशी राय, बस्तीराम, भक्त फूल सिंह इत्यादि ने लेकिन लाला लाजपत राय ने सारा जीवन आर्य समाज के लिए लगाया तथा अन्य लोगों में भी देशभक्ति की भावना भरकर स्वतन्त्रता आन्दोलन की तरफ ले गया और भारत की आजादी मे उसने काफी योगदान दिया। स्वामी दयानन्द भी हरियाणा को पसंद करता था। यहाँ पर आज भी हजारों स्कूल, कॉलेज, गुरूकुल हैं जो हरियाणा की शिक्षा में दिन–रात योगदान दे रहे हैं। तो इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आर्य समाज में हरियाणा की शिक्षा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि के हर जगह काफी योगदान दिया था।

REFERENCES :

1 शुक्ल , रामलखन, *आधुनिक भारत का इतिहास,* नई दिल्ली 2006, पृ 353

2 लाल लाजपत राय, *ए हिस्ट्री आफॅ दा आर्य समाज,* मनोहर पब्लिकेशन नई दिल्ली 1992– पृ 138–139।

3 सत्यकेतू विद्यायलंकार, व अन्य, *आर्य समाज का इतिहास* आर्य स्वाध्याय केन्द्र नई दिल्ली–2006, पृ0 220–221 ।

4 यादव के0सी0 *हरियाणा इतिहास एवं सस्कृति* मनोहर पब्लिकेशन नई दिल्ली 1992 पृ.162

5 सत्यकेतू विद्यायलंकार, व अन्य, *आर्य समाज का इतिहास* पृ0 665– 670.

6 वही.

7 स्वामी ओमानन्द *अभिनन्दन ग्रथं* स्नातक मण्डल, रोहतक 1993 पृ. 12

8 नन्दा सत्येन्द्र प्रकाश *महाऋषि दयानन्द सरस्वती : जीवन कार्य एवं दर्शन* दिल्ली 2011, पृ 11–13

9 सत्यकेतू विद्यायलंकार, व अन्य, *आर्य समाज का इतिहास* पृ0 660– 66